12/11/2021

Q→ भक्तिन का सारांश ?

→ • **भूमिका :-** भक्तिन रेखाचित्र हिंदी साहित्य की विरह वेदना की कवयित्री महादेवी द्वारा रचित है। भक्तिन रेखाचित्र में महादेवी जी ने लक्ष्मी नाम की एक औरत की चरित्र को व्यक्त किया है। लक्ष्मी का माता - पिता कौन थे, उसका शादी किसके हुआ, उसके बाल बच्चे कितने थे और अंत में लक्ष्मी कैसे महादेवी वर्मा के समीप आ पहुँची और लक्ष्मी का नाम कैसे भक्तिन पड़ा इसके बारे में महादेवी जी ने प्रस्तुत रेखाचित्र में चित्रित किया है।

• **सारांश :-** पिता और विमाता :- भक्तिन झूंसी गाँव के एक प्रसिद्ध अहीर की पुत्री है माँ की मृत्यु हो जाने से विमाता ने उसे पाला। पाँच वर्ष में ही उसका विवाह हंडिया गाँव के एक संपन्न अहीर के सबसे छोटे पुत्र से करा दिया गया। नौ वर्ष की होने पर उसका गौना करा दिया गया। लक्ष्मी को नैहर जाने पर पता चला कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है उसे विमता से ऐसा कटु और रुखा व्यवहार मिला जिसमें शिष्टाचार का लेश तक न था वह दुःख और अपमान से जलती हुई ससुराल तथा पति पर गहने फेंक-फेंककर विमाता पर आए क्रोध और पिता के बिछोड़ की व्यथा को शांत किया।

लक्ष्मी गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुख वाली तीन कन्या हो गई तीन लड़कियों की माता होने के कारण सास और जिठानियों द्वारा उसकी उपेक्षा होने लगी। सास तीन पुत्रों की माता होने के कारण मचिया पर बैठकर शासन चलाती थी। जिठानियाँ लक्ष्मी को

पति से उसकी झूठी - सच्ची शिकायतें करती रहती हैं परंतु पति उसे प्रेम करता था अत: उस पर कभी भी हाथ नहीं उठाता था जबकि जिठानियाँ आए दिन अपनी पति के द्वारा खूब मारी - पीटी जाती थी। अंत में लक्ष्मी अपने पति को लेकर परिवार से अलग हो गई। हिस्सा बाँट होते समय उसने सबसे अच्छा हिस्सा अपना लिया और बाद में परिश्रम के द्वारा अपनी गृहस्ती को सुखी एवं समृद्ध बना लिया।

लक्ष्मी ने बड़ी धूम-धाम से अपनी बड़ी लड़की का विवाह किया इसी समय दुर्भाग्य की घनघोर घटाओं ने उसे घेर लिया कच्ची गृहस्ती का भार लक्ष्मी पर छोड़कर पति ने संसार से विदा ली। इस समय लक्ष्मी की उम्र केवल 29 वर्ष की थी। लक्ष्मी के हरे-भरे खेत, मोटी ताजी गाय - भैंस और फलों से लदे वृक्षों से जिठानियों की नियत - डगमगा उठी। भविष्य में भी संपति को सुरक्षित रखने के लिए उसने छोटी लड़कियों के हाथ पीले कर उन्हें ससुराल पहुँचाया और पति के चुने हुए बड़े दामाद को घर जमाई बनाकर रखा।

परंतु दुर्भाग्य लक्ष्मी के पीछे हाथ धोकर पड़ा था। कुछ वर्षों पश्चात उसकी बड़ी लड़की भी विधवा हो गई घर वालों को लक्ष्मी की संपति पर अधिकार करने का एक अवसर मिल गया। उसके बड़े जेठ का लड़का अपने तीतर लड़ाने वाले एक साले को विधवा बहीन का दूसरा पति बनाने के लिए पकड़ लाया परंतु इस प्रस्ताव को लक्ष्मी की पुत्री ने स्वीकार नहीं किया। एक दिन वह तीतरबाज साला लक्ष्मी की अनुउपस्थिति में विधवा की कोठरी में चुपचाप घुस गया। अंत में विवश होकर लक्ष्मी की बेटी को विवश होकर तीतर साले के साथ रहना पड़ा। लक्ष्मी का वह दामाद हर रोज उसकी बेटी के साथ लड़ता रहता और बेटी विवश बनी हुई

क्रोध से जलती रहती। परिवार के षड़यंत्र के कारण लक्ष्मी की समृद्ध गृहस्थी उजड़ गई उसे लगान तक देना मुश्किल हो गया। अंत में एक बार लगान न पहुँचाने पर जमींदार लक्ष्मी को बुलाकर दिनभर कड़ी धूप में खड़ा रखा। वह इस अपमान को सह ना सकी और दूसरी ही दिन काम की तलाश में शहर आ गई।

13/11/21

भक्तिन काम की तलाश में महादेवी की यहाँ पहुँचती है और अपने को पाककला में प्रवीन घोषित करती है। दूसरे दिन सबसे जल्दी उठकर महादेवी की एक धुली हुई धोती पर गंगा जल की छींटे देकर पहले उसे प्रवित्र करती है फिर सूर्य और पीपल को जल चढ़ाकर दो मिनट तक नाक बंद करके जप करती है वह अपने चौके में महादेवी जी को भी नहीं आने देती है भक्तिन ने थाली में दाल परोसकर उसमें रोटियाँ रख दी और महादेवी के द्वारा तरकारी का प्रश्न उठने पर भक्तिन ने उसकी आवश्यकता नहीं बतलाई।

भक्तिन अपनी प्रभावशाली व्यक्तित्व से दूसरे को प्रभावित कर लेती है परंतु उस पर किसी दूसरे का प्रभाव नहीं पड़ता। भक्तिन बाजार की बनी हुई खाने का कोई वस्तु नहीं खाती और जी पुकारने पर ओ या उत्तर देती। भक्तिन के स्वभाव में कुछ दुर्गुण भी थे। वह झूठ बोलती थी इधर-उधर पड़े रूपये-पैसे चुपचाप उठाकर छिपा देती और तर्क द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयत्न करती कि ऐसा करके उसने कोई अनुचित कार्य नहीं किया।

भक्तिन के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ एक ही है और वह है महादेवी की अनन्य सेविका होना। महादेवी जब उत्तर पुस्तिकाओं को देखने या चित्र बनाने में व्यस्त रहती, तब वह उनका हाथ बटाने की घोषणा करती हुई पास आकर बैठ जाती है। वह अपने अतिरिक्त अन्य

किसी को महादेवी का हाथ बटाने के योग्य नहीं समझती
महादेवी की जब कोई नयी पुस्तक छपकर आती तब वह
उसे उलट - पुलट कर देखती और यह जानने का प्रयास
करती है कि इस पुस्तक में उसकी सहायता का कहा तक
योग्य रहा है। भक्तिन महादेवी की सेवा करती हुई सेवा धर्म
में हनुमान जी से होड़ लगाती। महादेवी रात्री में सब के
सो जाने पर जब कोई लेख लिखने या कविता करने बैठती
तब भक्तिन भी उनके कमरे में एक कोने में दरी पर बैठकर
रात्री भर जागरण करती उसकी आँखे नियंत्रण महादेवी जी
की गतिविधियों का अनुसरण करती रहती महादेवी का संकेत
पाते ही वह किताब का रंग पुछकर रेक में से किताब निकाल
देती भक्तिन इसी प्रकार महादेवी के लेखन कार्य में
सहायक बनती। वह महादेवी जी के बाद में सोती और
उनसे उठने से पहले उठती।

भक्तिन- महादेवी की ऐसी अनन्य सेविका
थी कि उनकी कुशल के लिए सदैव चिंतित रहती थी, द्वितीय महायुद्ध
के समय चारों ओर आतंक छाया हुआ था। भक्तिन की बेटी
रामाद उसे लेने आए परंतु वह उनके साथ नहीं गई वह कभी
कभी गाँव हो आती, परंतु महादेवी के छोड़ने का साहस उसमें
नहीं होता। महादेवी जी से मिलने के लिए जो आगन्तुक आते
उनका सम्मान वह देखकर करती। कवियों को वह निठल्ला
गाने बजाने वाला मानती थी। भक्तिन स्वभाव से ममतामयी
थी। प्रत्येक का दुःख उसे प्रभावित करता। किसी विद्यार्थी के
जेल से जाने का सामाचार उसे व्यतीत कर देता। जेल से
वह बहुत डरती थी। उसे चिढ़ाने के लिए लोगों ने यह
कहने प्रारंभ कर दिया था कि महादेवी जेल जाएगी और
वह महादेवी के साथ ही जेल जाने का जिद्द करती।

भक्तिन महादेवी के पास अंत
समय तक नहीं रहती उनके लिए भक्तिन की कहानी अभी
अधुरी है जिसे भक्तिन को खोकर वे पूरा करना नहीं

चाहती —— "भक्तिन की कहानी अधूरी है, पर उसे खोकर मैं इसे पूरा करना नहीं चाहती।"

• <u>निष्कर्ष</u> :— अतः निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि महादेवी जी की रेखाचित्र भक्तिन एक सफल और सुलझी हुई रेखाचित्र है। इसमें महादेवी जी ने एक गरीब लक्ष्मी नामक औरत की चरित्र को दर्शाया है। इसमें लक्ष्मी नामक औरत की बालयकाल, विवाह के बाद का काल और महादेवी के साथ के रहने के समय को पाठक के सामने प्रस्तुत किया। लक्ष्मी नामक औरत लक्ष्मी नाम से भक्तिन कैसे बनी यह बात हमें देखने को मिला है महादेवी ने भक्तिन को हनुमान की तरह ही कल्पना की है। हनुमान जी जैसे राम के साथ छाया की तरह रहते वैसे ही भक्तिन भी महादेवी की छाया बनकर रहती है और भक्तिन एक अनन्य सेविका है।